International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2025; 2(6): 100-103
© 2025 IJMH
www.themultijournal.com
Received: 28-11-2025
Accepted: 19-12-2025
Publish : 20-12-2025

गीता देवी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
गुरु काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा (पञ्जाब)

शोध-निर्देशक
डॉ राकेश कुमार सिंह
सहाचार्य, हिन्दी विभाग,
गुरु काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा (पञ्जाब)

Correspondence:
गीता देवी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
गुरु काशी विश्वविद्यालय,
तलवंडी साबो, बठिंडा (पञ्जाब)

हरियाणा संस्कृति के लोक गीतों में नारी छवि

गीता देवी, डॉ राकेश कुमार सिंह

सारांश -

हरियाणा के लोकगीतों में नारी की छवि अत्यंत व्यापक,जीवंत और बहुआयामी रूप में प्रस्तुत होती है। ये लोकगीत केवल मनोरंजन के साधन नहीं, बल्कि स्त्री जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, मानसिक और भावनात्मक पहलुओं को प्रतिबिंबित करने वाले महत्वपूर्ण माध्यम हैं। लोक गीतों में नारी को कभी समर्पित पत्नी, स्नेहमयी मां, प्रिय बहन और संवेदनशील बेटी के रूप में दर्शाया गया है, तो कभी साहसी वीरांगना, कर्मठ श्रमिका और विद्रोही चेतना की धारक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। विवाह, व्रत - त्यौहार, धार्मिक अनुष्ठान , श्रम, प्रेम और विद्रोह जैसे विविध प्रसंगों पर आधारित लोकगीतों में स्त्री की भूमिका बहुपरतीय रही है।ये गीत नारी के त्याग,श्रम, और सामाजिक उपेक्षाओं को उजागर करते हैं। वहीं कई गीत स्त्री की आत्म अभिव्यक्ति, संघर्ष और शक्ति को भी स्वर देते हैं। लोकगीतों में दहेज़ प्रथा, स्त्री शिक्षा, पारिवारिक अत्याचार और लिंग भेद जैसे सामाजिक मुद्दों को भी गहराई से उकेरा गया है। हरियाणवी लोकगीतों में स्त्री की छवि पारम्परिक आदर्शों से जुड़ी होने के बावजूद समय के साथ - साथ बदलती दृष्टियों और सामाजिक चेतना का प्रतिबिम्ब भी है इन गीतों में नारी केवल सहनशील प्राणी नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक भी दिखाई देती है इस प्रकार हरियाणा के लोकगीत नारी जीवन के विविध पक्षों को उजागर करने का विश्वसनीय स्रोत है।

मुख्य शब्द:- पारिवारिक संबंध, लोक संस्कृति, दहेज प्रथा, नारी श्रम, विद्रोही चेतना।

प्रस्तावना :-

हरियाणा की लोक संस्कृति में लोकगीतों की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं, जो न केवल सामाजिक संरचना को स्वर देते हैं, बल्कि सांस्कृतिक संरचना को भी स्वर देते हैं। इसके अलावा यह सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक स्मृति को भी जीवन्त रखते है। हरियाणा के लोकगीतों में नारी एक प्रमुख पक्ष है - जो समय, समाज, और परम्परा के अनुसार विविध स्वरूपों में प्रकट होती है। लोकगीतों में नारी को कभी एक सृजनशक्ति के प्रतीक रूप में प्रस्तुत किया गया है, कभी वह प्रेमिका है, तो कभी माँ, पत्नी, बहन और बेटी। इन गीतों में स्त्री का बहुआयामी चित्रण हरियाणवी समाज के दृष्टिकोण को उजागर करता है। हरियाणा की स्त्रियां लंबे समय से पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की धुरी रही है। ग्रामीण समाज की स्त्री केवल घर की देखभाल या बच्चे पैदा करने वाली जीव मात्र नहीं रही, बल्कि यह खेतों में भी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर श्रम करती है। लोक संस्कारों को संजोती है। और लोकधर्म की पालक भी है। यही स्त्री लोकगीतों में अत्यंत जीवंत और प्रभावी रूप में अभिव्यक्त हुई है। चाहे वह शादी - विवाह के गीत हो, ऋतु आधारित गीत, देवी भजन, वीरांगनाओं की कथाएं या सामाजिक व्यंग्य - गीत, हर नारी गीत की आत्मा है। लोकगीतों में नारी छवि को समझने के लिए उसके विविध रूपों का अध्ययन आवश्यक है। हमारे समाज में बेटी के जन्म को बेटे की तुलना में अशुभ माना जाता है।

जि दिन लाडो तेरा जन्म हुआ, हुई है बजर की रात
पहरे वाले लाडो सो गए लग गए, चन्दन कीवाड़
टूटे खटोले तेरी अम्मा वौ पौढ़े, बाबल गहन गंभीर
गुड़ की पात तेरी अम्मा वह पीवै, टका भी खरजा ना जाय
सौ सठ दिवले बिटिया बाल धरे हैं, तो भी गहन अंधेर[1]

हरियाणवी विवाह गीतों में नारी की छवि एक संवेदनशील बेटी और समर्पित पत्नी की होती है। उदाहरण के लिए, विदाई गीतों में बेटी के घर से विदा होने की पीड़ा और माता - पिता का दु:ख, बड़े ही मार्मिक रूप में व्यक्त होता है। ऐसे गीतों में लड़की को 'पराया धन' माना जात्ता है। और उसका भविष्य केवल ससुराल के प्रति समर्पण देखा जाता है। यह दृष्टिकोण नारी के त्याग और कर्तव्य की छवि को समाज में स्थापित करता है। जो पितृसत्तात्मक सोच का प्रतिनिधित्व भी करता है। बेटी की विदाई का मार्मिक चित्रण निम्न लोकगीत में हुआ है-

मैं तो गुड़िया भूलि हो, बाबल थारे आले म्हं
म्हारी पोती खेले ए, धीयड़ घर जा आपणै
तेरा पनघट सुन्ना हो, बाबल तेरी धीय ए बिना
म्हारी बहू भरैंगी हे, धीयड़ घर जा आपणै
थारा गोबर बिणकै हो, बाबल थारे ठाणां म्हं
हम बांदी ला ल्यांगै, धीयड़ घर जा आपणै
म्हारा गाड्डा अट्क्या हो, बाबल थारी सीमा म्हं
हम अरथ जुड़ा दया हें, धीयड़ घर जा आपणै[2]

विवाह गीतों में 'बन्ना बन्नी' की शृंखला विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जहाँ नारी को एक नई भूमिका में देखा जाता है, वह प्रेमिका, पत्नी और बहू के रूप में सामने आती है। इन गीतों में हास्य व्यंग्य, श्रृंगार और सामाजिक अनुशासन का सुंदर समन्वय देखने को मिलता है। विवाह उपरान्त ससुराल में स्त्री स्थिति को इन गीतों में बड़ी सजीवता के साथ उकेरा गया है। जहां उसे पराये घर में खुद को स्थापित करना होता है।

इन गीतों में नारी की सहनशीलता, उसकी सामाजिक समझ, उसका संयम और समर्पण स्पष्ट रूप से उभरते है। हरियाणा की नारी धार्मिक परम्पराओं की भी संवाहक रही है। वह देवी – आराधना, व्रत – उपवास, तीज - त्योहारों की प्रथा की वाहक रही है और यह सब लोकगीतों में सुंदर ढंग से परिलक्षित होता है। तीज, करवा चौथ, फाग, सावन, संतोषी माता व्रत, शीतला, अष्टमी जैसे त्योहारों पर गाए जाने वाले गीतों में स्त्री की धार्मिक आस्था, पति के लिए समर्पण और पारिवारिक कल्याण की कामना का चित्रण मिलता है। ये गीत नारी के पारिवारिक जीवन की गहराई और उसकी सामाजिक भूमिका को दर्शाते है। धार्मिक लोकगीतों में नारी को कभी भक्त के रूप में, तो कभी देवी के रूप में चित्रित किया गया है।

हरियाणा के लोकगीतों में वीरांगनाओं की कहानियां भी प्रमुखता से गाई जाती है। झलकारी बाई, रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, देवी चन्द्रिका जैसी नारियों पर आधारित गीतों में नारी की वीरता, संघर्ष, आत्मबल और स्वतंत्रता की भावना उजागर होती है। इन गीतों के माध्यम से यह स्थापित होता है कि नारी को केवल सहनशील और पराश्रयी नहीं माना गया, बल्कि वह शक्ति, साहस और नेतृत्व की प्रतीक भी है।

कुछ गीतों में स्त्री – पुरूष संबंधों का श्रृंगारिक पक्ष भी अत्यन्त प्रभावी ढंग से प्रकट होता है। झूमर, फाग, घुमर जैसे गीतों प्रेम की कोमल भावनाएं यौवन की आकांक्षा और आत्मिक जुड़ाव का चित्रण अत्यन्त स्वाभाविक ढंग से किया गया है। इन गीतों में नारी प्रेमिका के रूप में अपने भावों को व्यक्त करती है। वह संकोचशील भी है और स्वाभाविक भी। कुछ गीतों में वह खुले मन से प्रेम प्रस्ताव रखती है, जिससे यह पता चलता है हरियाणवी नारी केवल बंद कमरे में रहने वाली कायर प्राणी नही, बल्कि भावनाओं को व्यक्त करने वाली आत्म सम्पन्न इकाई है। हरियाणा के लोक गीतों में फागण के महीने में पति को तथा फाग और चांदनी को उपालम्य देने वाला विप्रलंभ श्रृंगार का गीत यहा प्रस्तुत है -

जब साजन प्रदेश गए, मस्ताना फाग्गण क्यूं आया
ज्यब सारा फाग्गण बीत गया, तैं घर म्हं साजन क्यूं आया,
छंम - छंम नाचै सब नर – नारी, मैं क्यों बैठी दूखां की मारी,
मेरे मन म्हं जब मचा अन्धेर, तैं चान्द का चाँदण क्यूं आया,
ज्यब पिया आया, जी खिल्यां नां, जब जी आया, पी मिल्या नां,
साजन बिन जोबन क्यूं आया, जोबन बिन साजन क्यूं आया,
मन की तै अरधी बन्छि पड्यी, आख्यां म्हं लागी झड़ी,
जब फल मेरे मन का सुक्यां लजमारया फाग्गण क्यूं आया,[3]

हरियाणा की लोकगीतों में नारी की सामाजिक स्थिति पर गहरा प्रकाश डाला गया है। विशेष रूप से दहेज प्रथा, बेटी के प्रति भेदभाव नारी शिक्षा, पारिवारिक अत्याचार, सास - बहू के आपसी झगड़े, जैसे विषयों पर गाए गए गीत, स्त्री के दुख, संत्रास और सामाजिक असमनताओं को उजागर करते है। दहेज संबंधी गीतों में कन्या पक्ष की आर्थिक विवशता,

सामाजिक दबाव और विवाह को बोझ समझे जाने की मानसिकता की आलोचना होती है।

शादीशुदा लड़की जब बाबुल के घर को छोड़कर ससुराल जाती है, तो वहां उसे पीहर की बहुत याद सताती है। पीहर मे बिताए गए सुखद अनुभवों का अहसास होता है। इन्हीं भावों का चित्रण निम्न हरियाणवी संस्कार गीत में हुआ है -

केले की छाया हे, बेबे नींद आवै।
घर की आज़ादी हे, बेबे याद आवै।
जब सासू हे बेबे पीसण की कहवै।
तब बड़ी भावज हे, बेबे याद आवै।
जब सासू हे बेबे, मेरे तै रोटी पकवावै।
तब मन्नै माँ की हे, बेबे याद आवै।
जब नणदी हे बेबे, पाणी मंगवावै।
तब छोटी भाभी हे, बेबे मन्नै याद आवै।
जब जेठाणी हे बेबे, कासण मंजावै।
तब मेरी भाभी हे, बेबे मन्नै याद आवै।[4]

हरियाणवी लोकगीतों में नारी के श्रम को भी विशेष रूप से स्थान मिला है। चाहे वह खेतों में काम करना हो, पशुओं की देखभाल, घर की सफाई ,पानी भरना, चक्की पीसना, कढ़ाई – बुनाई, या बच्चों की देखभाल हरियाणवी नारी का परिश्रम उसके दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा है। गीतों में उसके श्रम को गौरव के साथ प्रस्तुत किया गया है। इन गीतों में जीवन की कठिनाइयों को भी मधुर शब्दों और सुरों के माध्यम से प्रस्तुत कर श्रम को गरिमा प्रदान की जाती है। सामाजिक नियन्त्रण और पारिवारिक बंधनो के बावजूद, कुछ लोकगीतों में नारी की विद्रोही चेतना और आत्मभिव्यक्ति की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है। वह अपने जीवन को केवल पति या परिवार के लिये नही, बल्कि स्वयं के अस्तित्व और इच्छाओं के लिए भी जीना चाहती है। उदाहरणत: कुछ गीतों में स्त्री अपनी शिक्षा, स्वतंत्रता और फैसलों को लेकर आग्रह करती है। यह लोकगीतों में उभरती स्त्रीवादी चेतना का संकेत है। हरियाणा प्रदेश की कुछ जातियों में बाल - विवाह जैसी कुरीतियों का भी विरोध करती हुई दिखाई देती है –

कदम के पेड़ के नीचे लाडो,
अरज पिता से करती है।
पिता जी हमारी शादी मत करो,
उमर बारह वर्ष की है।
लिख दो नाम कांग्रेस मैं,
करुंगी देश की सेवा।
उठा लो ओम का झंडा ,
करुँगी देश की सेवा।[5]
बनूंगी सरस्वती देवी,
बनूंगी में भी इंदिरा गाँधी।

हरियाणा के लोक गीतों में वृद्ध नारियों की छवि भी मीलती है। जैसे – दादी, नानी, सास जो परिवार में मार्गदर्शक होती है। कुछ गीतों में सास के बहू पर किए गए अत्याचारों का चित्रण भी मिलता है। तो कुछ में दादी के अनुभवों और स्नेहिल व्यवहार का वर्णन होता है। इन गीतों के माध्यम से पारिवारिक संरचना और स्त्रियों के आपसी संबंधों की जटिलताएं सामने आती है। जो समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सावन के गीतों में सामाजिक संबंधों की बड़ी मार्मिक अभिव्यंजना देखने को मिलती है। जैसे - बहन अपने भाई के सामने अपनी वस्तुस्थिति को किस प्रकार उद्घाटित करती है –

सासु तो बीरा, चुल्हे की आग
नणद भादों की बिजली
सोहरा तो बीरा काला सा नाग
देवर सांप सपोलिया
राजा तो रे बीरा मेहंदी का पेड़
कदी रचे कदी ना रचे।[6]

एक अन्य लोकगीत जिसमें नारी अपने ससुराल में अपनी दयनीय स्थिती का वर्णन करती है **मैं, पीसण उठी चाकी पै सास लड़ै सै,**
तूं मोटा पीसै, गैंहूआ का नाश करै सै।
मैं धार काढू, धारा पै जेठ लड़ै सै,
तूं अधी काढै, झोटी का नाश करै सै।
मैं पाणी चाली, कुएं पै नणद लड़ै सै,
तूं टोकणी फोड़ै, नेजु का नाश करै सै।
मैं रोटी पोऊं, रोटियां पै जेठाणी लड़ै सै,
तूं काची छोड़ै, चून का नाश करै सै।
मैं सोवण चाली, सेजां पै शौक लड़े सै,
तूं पिलंगा तौड़े, पिया का नाश करै सै।
मैं भारणै आई, देहली पै नाश पड़या सै,
तूं मन्नै खा ले कुणंबे की जै राड़ मिटै सै।
मैं क्यूंकर खा ल्यूं, ईश्वर का हुक्म नही सै।[7]

श्रम पूर्ण जीवन में श्रमगीतों का जन्म अनायास ही हो जाता है। श्रम की इस दुरुहता को कम करने के लिए जो गीत गाए जाते है। वे श्रमिकों में स्फूर्ति का संचार करते है। अत: हरियाणा प्रदेश के लोकगीतों में नारी के श्रम व मेहनत का वर्णन मिलता है –

आठ बुलधां का रे हालिडे 'नीरणा' (न्यार फूंस, पशुओ का खाना)
कोय चार हालियां की 'छाक' (खाणा)
बरसण लागी रे काली बादली
कोय सास - नणद का रे हालिडे 'ओलणा' (पर्दा, तकरार)
कोय कुंण ठुवावै 'झाल' (चारे का टोकरा)
बरसण लागी रे काली बादली
कोय ऊपर सी धर लै गौरीधण टोकरा
कोय झट से उठा लै छाक
बरसण लागी रे काली बादली[8]

इस लोकगीत में नारी अपनी पति से कह रही है कि उसके घर में पशुओं व खेतों का बहुत ज्यादा काम है जिसके कारण वह बहुत थक जाती है। समाज में व्याप्त यो, मान्यताओं, और लिंग आधारित भूमिकाओं का विश्लेषण लोकगीतों के माध्यम से संभव होता है। लोकगीतों में दिखने वाली नारी की छवि, जहाँ एक ओर समाज के आदर्शों की प्रस्तुति करती है, वहीं दूसरी ओर यह छवि उन आदर्शों की आलोचना और पुन: परिभाषा करती है। यही लोकसाहित्य की ताकत है, यह न केवल समाज के विविध रूपों को दर्शाता है, बल्कि उसे दिशा भी देता है।

निष्कर्ष –

हरियाणा के लोकगीतों में नारी की छवि अत्यंत बहुआयामी, यथार्थपरक, संवेदनशील और सशक्त रूप में उभरकर सामने आती है। वह केवल त्याग, सहनशीलता और करुणा की मूर्ति नहीं है, बल्कि साहस, परिश्रम, आत्मसम्मान, विद्रोह, प्रेम और बुद्धिमत्ता की जीवंत प्रतिमूर्ति भी है। लोकगीतों में नारी का जीवन उसके दैनिक संघर्षों,

सामाजिक दायित्वों और भावनात्मक अनुभवों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। वह खेतों में पुरुष के समान श्रम करती हुई दिखाई देती है और घर-परिवार की जिम्मेदारियों को भी कुशलता से निभाती है। हरियाणवी लोकगीतों में नारी प्रेम और विरह की गहन अनुभूतियों को व्यक्त करती है। कहीं वह पति के सान्निध्य में सुख का अनुभव करती है, तो कहीं वियोग की पीड़ा में अपनी भावनाओं को गीतों के माध्यम से उकेरती है। अनेक लोकगीतों में वह सामाजिक रूढ़ियों और अन्याय के विरुद्ध मौन प्रतिरोध या स्पष्ट विद्रोह करती दिखाई देती है। उसकी वाणी में व्यंग्य, तर्क और आत्मविश्वास झलकता है, जो उसकी बुद्धिमत्ता और चेतना को दर्शाता है। लोकगीतों की नारी केवल व्यक्तिगत भावनाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना की वाहक भी बनती है। वह बदलते समय के साथ अपनी भूमिका और पहचान को पुनः परिभाषित करती रहती है। इस प्रकार हरियाणा के लोकगीतों में नारी का चित्रण हरियाणवी समाज की आत्मा को समझने का एक सशक्त और प्रभावी माध्यम सिद्ध होता है।

सहायक संदर्भ सूची

1 विशिष्ठ, डॉ. सावित्री, हरियाणा की लोक संस्कृति, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला, 2016।

2 वर्मा, डॉ. हरीशरन, हरियाणवी संस्कार गीतों की संस्कृति पृष्ठभूमि, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला, 2017।

3 मलिक डॉ. भीमसिंह, हरियाणा लोक साहित्य : सांस्कृतिक संदर्भ, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़, 1990।

4 शारदा, साधुराम, हरियाणा के लोकगीत, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला, 2011।

5 कादयान, ओमप्रकाश, हरियाणा के लोकगीत, भाग दो, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला, 2012।

6 यादव, डॉ. शंकर लाल, हरियाणा के लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2017।

7 चौहान, डॉ. सुमन, हरियाणवी लोक संस्कृति एवं स्त्री दृष्टिकोण, ज्ञानसागर पब्लिकेशन, हिसार, 2018।

8 मलिक, धर्मपाल, हरियाणवी लोक संस्कृति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण, भारत बुक सेंटर, रोहतक, 2016।

9 नाहर संगीता, भारतीय लोक साहित्य में स्त्री विमर्श, साहित्य निकेतन, दिल्ली, 2014।

सन्दर्भ ग्रन्थः -

[1] हरियाणा के लोकगीत, पृष्ठ संख्या 41

[2] स्वयं संकलित

[3] हरियाणा लोक साहित्य : सांस्कृतिक संदर्भ पृष्ठ संख्या 16

[4] हरियाणवी संस्कार गीतों की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पृष्ठ संख्या 165, 2.

[5] वहीं, पृष्ठ संख्या 114

[6] दर्शना देवी, गाँव जेहादपुर, जिला झज्जर की निवासी

[7] हरियाणा की लोक संस्कृति पृष्ठ संख्या 112

[8] हरियाणा की लोक संस्कृति पृष्ठ संख्या 34